ASTRO ARPITA NATH

शुरुआती लोगों के लिए कुंडली (D1 जन्म चक्र) कैसे पढ़ें

Arpita Nath द्वारा · कुंडली कैसे पढ़ें · 2026-09-19

वैदिक जन्म कुंडली / कुंडली या D1 राशि चार्ट को पढ़ना - पहली नज़र में कठिन लग सकता है। हालाँकि, प्रत्येक चार्ट चार मुख्य घटकों से बने एक संरचित, तार्किक ढाँचे पर काम करता है:

1. भाव (Houses): मानवीय अनुभवों के 12 क्षेत्र (वे रंगमंच जहाँ जीवन घटित होता है)।

2. राशियाँ (Signs): 12 राशि मूलरूप (प्रत्येक भाव का वातावरण या परिवेश)।

3. ग्रह (Planets): 9 खगोलीय पात्र (कर्मों को प्रदान करने वाली ऊर्जावान शक्तियाँ)।

4. लग्न (Ascendant): आपके जन्म के समय उदित होने वाली राशि (वह संदर्भ बिंदु जो पूरे चार्ट को निर्धारित करता है)।

किसी भी D1 चार्ट को सटीकता से पढ़ने के लिए चरण-दर-चरण आधार यहाँ दिया गया है।

चरण 1: कुंडली शैली और प्रथम भाव (लग्न) की पहचान करें

कुंडली का प्रारूप उपयोग की जाने वाली क्षेत्रीय परंपरा पर निर्भर करता है:

Chart D1 – Rashi

North Indian | South Indian

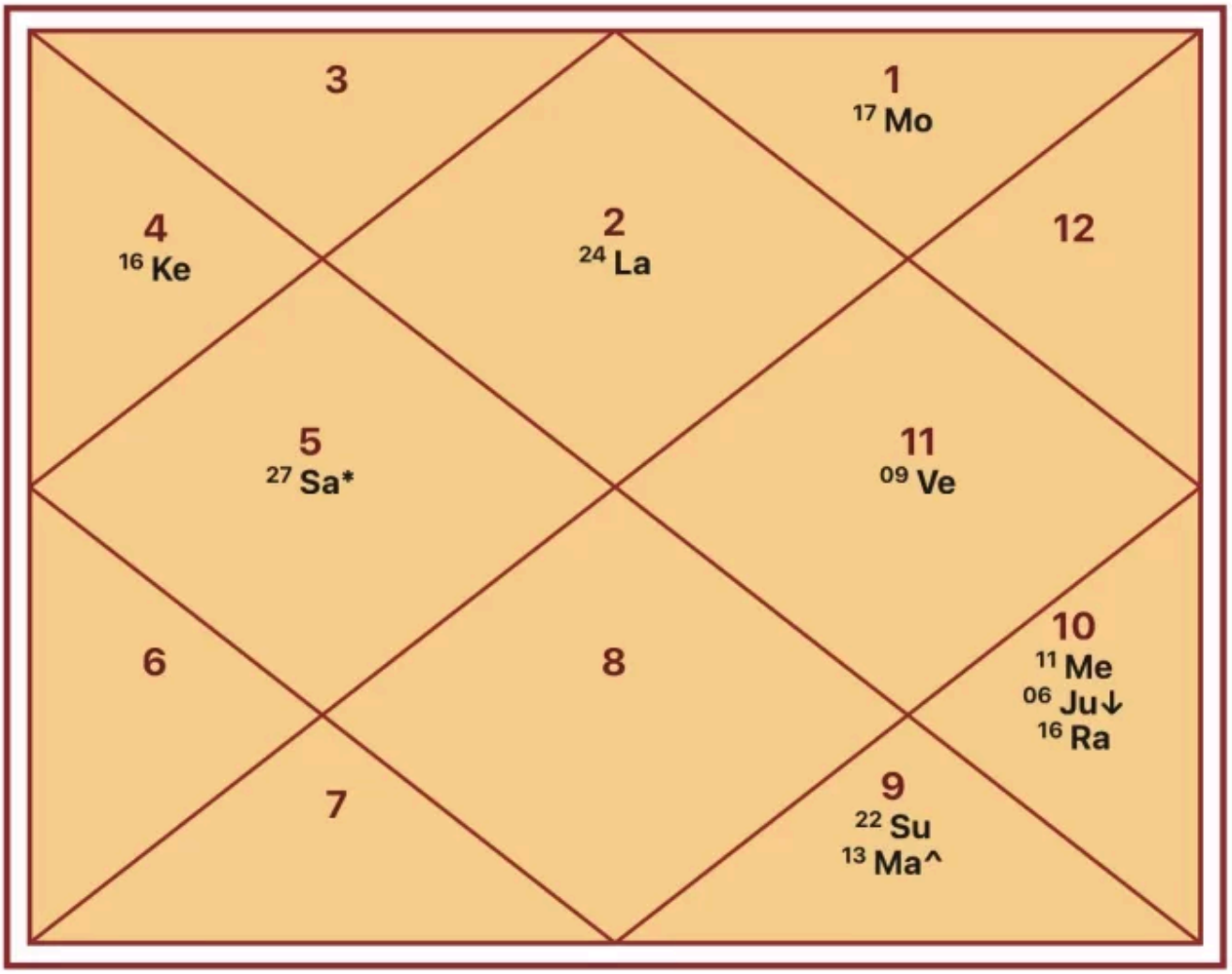

• **उत्तर भारतीय प्रारूप (डायमंड चार्ट):** भाव अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं। शीर्ष केंद्र का हीरा (डायमंड) हमेशा प्रथम भाव (लग्न) होता है। शेष भाव घड़ी की विपरीत दिशा (एंटी-क्लॉकवाइज) में 1 से 12 तक आगे बढ़ते हैं। भावों के अंदर लिखे अंक राशियों को दर्शाते हैं, भाव संख्याओं को नहीं।

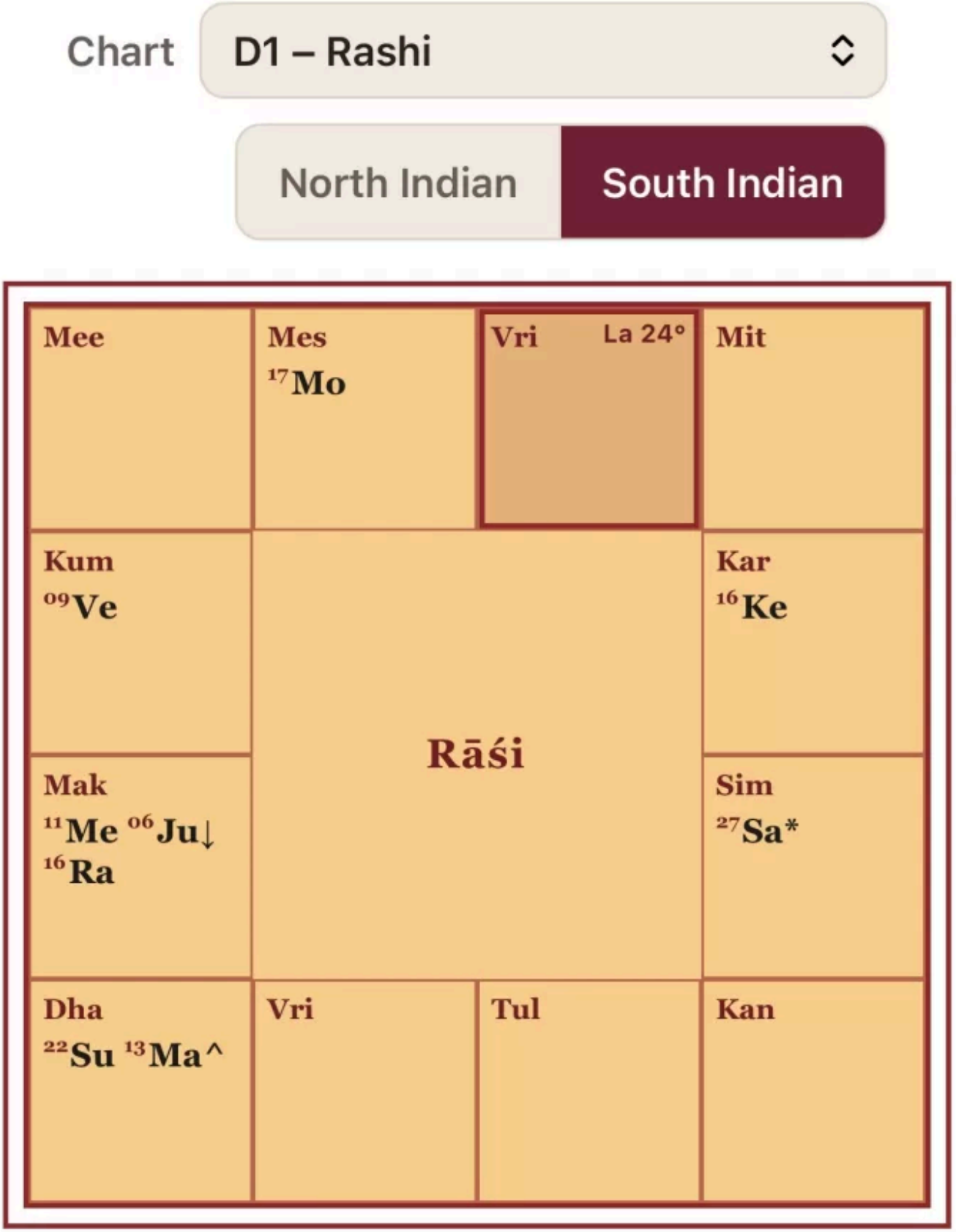

• **दक्षिण भारतीय प्रारूप (स्क्वायर चार्ट):** राशियाँ अपने स्थान पर स्थिर रहती हैं (ऊपर-बाएँ से दूसरा बॉक्स हमेशा मेष होता है, उसके बाद वृषभ, आदि, जो घड़ी की दिशा में आगे बढ़ते हैं)। लग्न को एक तिरछी रेखा (स्लैश) या "Asc" / "La" के लेबल से चिह्नित किया जाता है।

चरण 2: 12 राशियों और उनके अंकों को समझें

उत्तर भारतीय कुंडली में, किसी भी भाव में लिखा हुआ अंक यह दर्शाता है कि उस भाव में कौन सी राशि स्थित है:

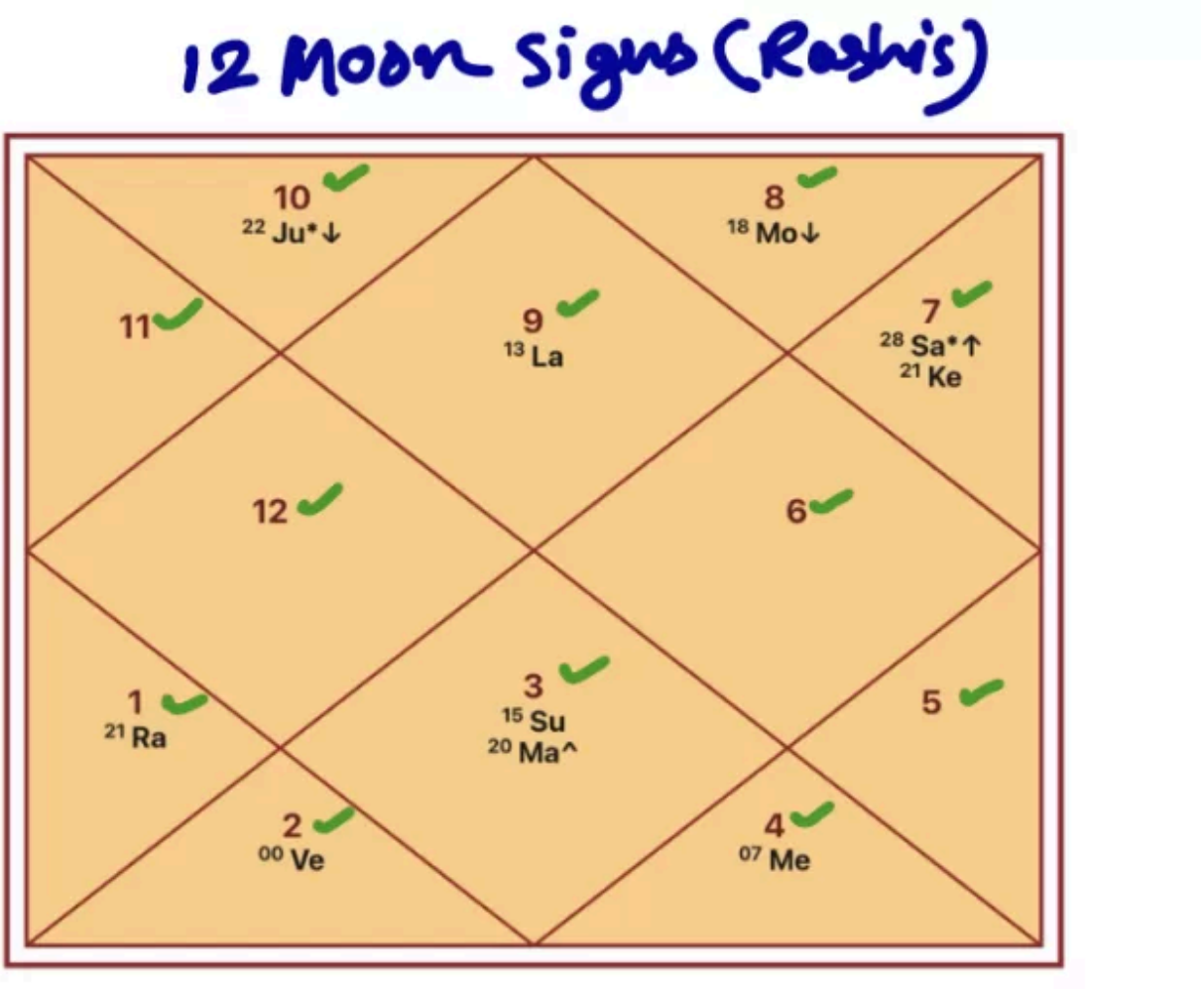

1 - मेष (Aries), स्वामी मंगल
2 - वृषभ (Taurus), स्वामी शुक्र
3 - मिथुन (Gemini), स्वामी बुध
4 - कर्क (Cancer), स्वामी चंद्रमा
5 - सिंह (Leo), स्वामी सूर्य
6 - कन्या (Virgo), स्वामी बुध
7 - तुला (Libra), स्वामी शुक्र
8 - वृश्चिक (Scorpio), स्वामी मंगल
9 - धनु (Sagittarius), स्वामी बृहस्पति (गुरु)
10 - मकर (Capricorn), स्वामी शनि
11 - कुंभ (Aquarius), स्वामी शनि
12 - मीन (Pisces), स्वामी बृहस्पति (गुरु)

चरण 3: 12 भावों (घरों) और जीवन के क्षेत्रों को समझें

प्रत्येक भाव बाह्य और आंतरिक जीवन के विशिष्ट क्षेत्रों को नियंत्रित करता है:

12 Houses

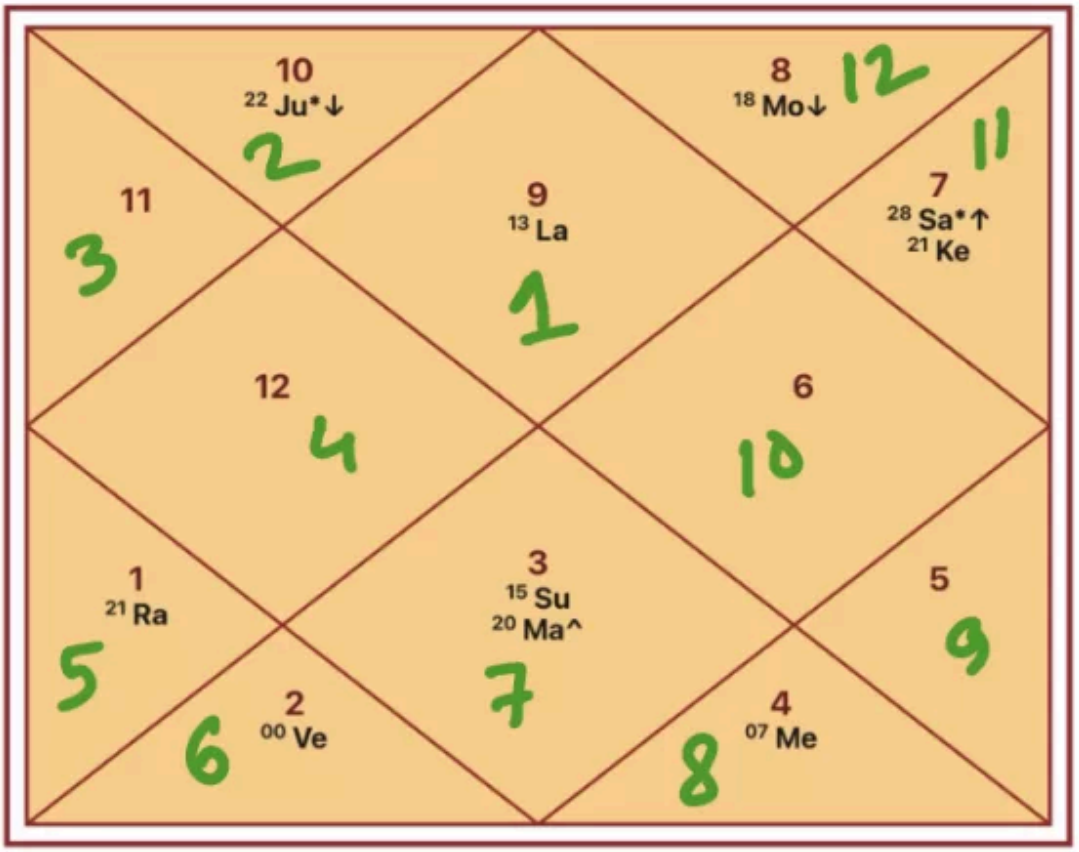

• **प्रथम भाव (तनु भाव):** भौतिक शरीर, जीवन शक्ति, रूप-रंग, आत्म-पहचान और संपूर्ण जीवन पथ।

• **द्वितीय भाव (धन भाव):** धन, तरल संपत्ति, पारिवारिक वंश, प्रारंभिक बचपन और वाणी।

• **तृतीय भाव (सहज भाव):** साहस, स्व-प्रयास, छोटे भाई-बहन, संवाद और हस्त कौशल।

• **चतुर्थ भाव (सुख भाव):** आंतरिक शांति, सुख, माता, घरेलू वातावरण, भूमि और वाहन।

• **पंचम भाव (पुत्र भाव):** बुद्धि, संतान, रचनात्मकता, रोमांस और पूर्व जन्म के संचित पुण्य (पूर्व पुण्य)।

• **षष्ठ भाव (शत्रु भाव):** दैनिक कार्य, स्वास्थ्य समस्याएं, ऋण, शत्रु, मुकदमेबाजी और बाधाएं।

• **सप्तम भाव (जाया भाव):** विवाह, कानूनी अनुबंध, व्यावसायिक साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार।

• **अष्टम भाव (रन्ध्र भाव):** दीर्घायु, अचानक होने वाले परिवर्तन, गुप्त ज्ञान, बिना कमाया हुआ धन और गंभीर संकट।

• **नवम भाव (धर्म भाव):** उच्च दर्शन, आध्यात्मिकता, गुरु/शिक्षक, पिता और भाग्य।

• **दशम भाव (कर्म भाव):** करियर, सार्वजनिक प्रतिष्ठा, सामाजिक स्थिति, अधिकार और व्यावसायिक विरासत।

• **एकादश भाव (लाभ भाव):** आर्थिक लाभ, सामाजिक नेटवर्क, बड़े समुदाय, बड़े भाई-बहन और पूर्ण होने वाली इच्छाएं।

• **द्वादश भाव (व्यय भाव):** हानि, व्यय, विदेश यात्रा/निवास, निद्रा, एकांत और मोक्ष।

चरण 4: भावों को उनके कार्यात्मक वर्ग के अनुसार समूहित करें

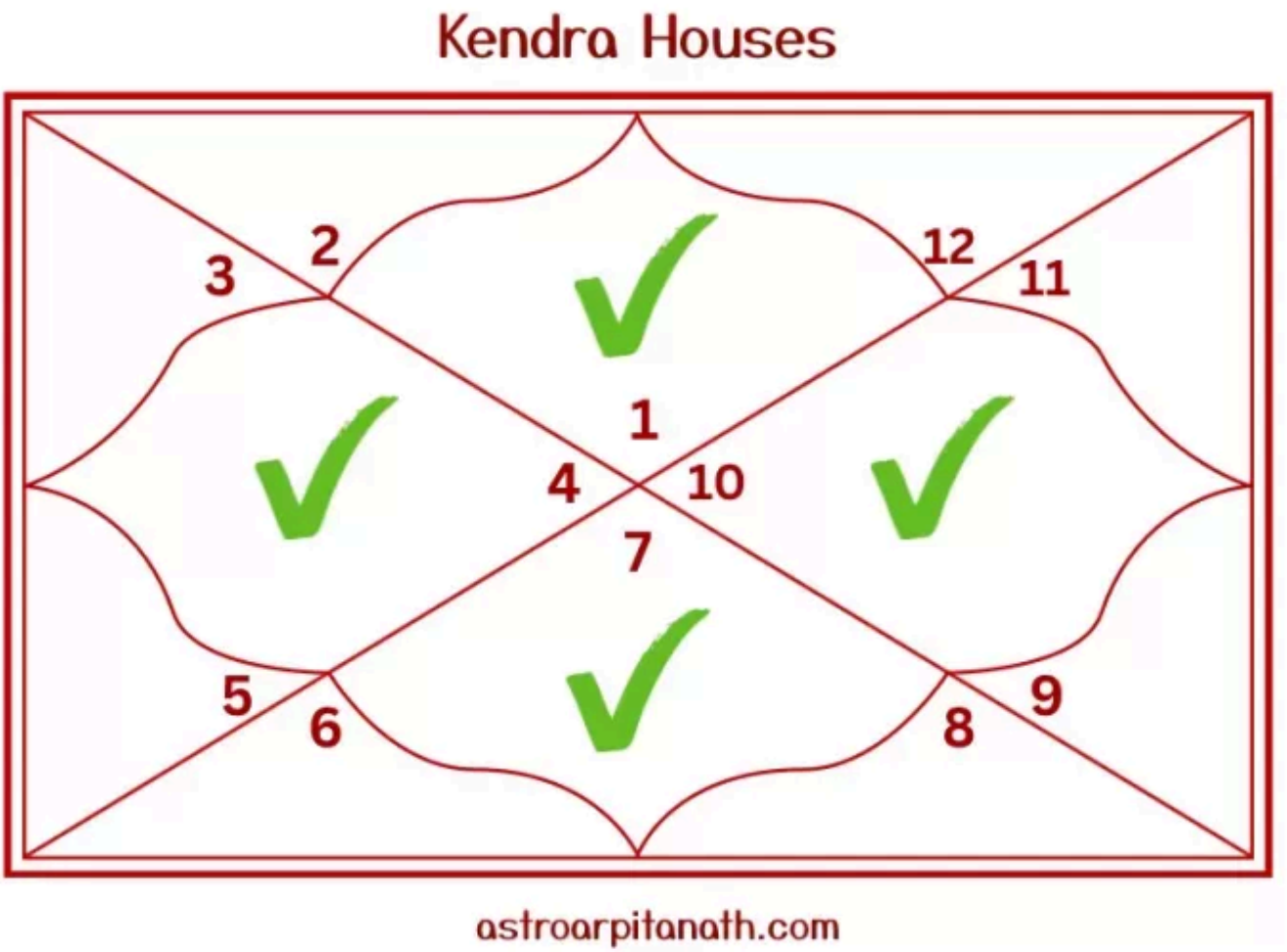

• **केंद्र (कोण - भाव 1, 4, 7, 10):** जीवन के मुख्य स्तंभ। यहाँ स्थित ग्रह मजबूत सार्वजनिक दृश्यता और स्पष्ट प्रभाव के साथ कार्य करते हैं।

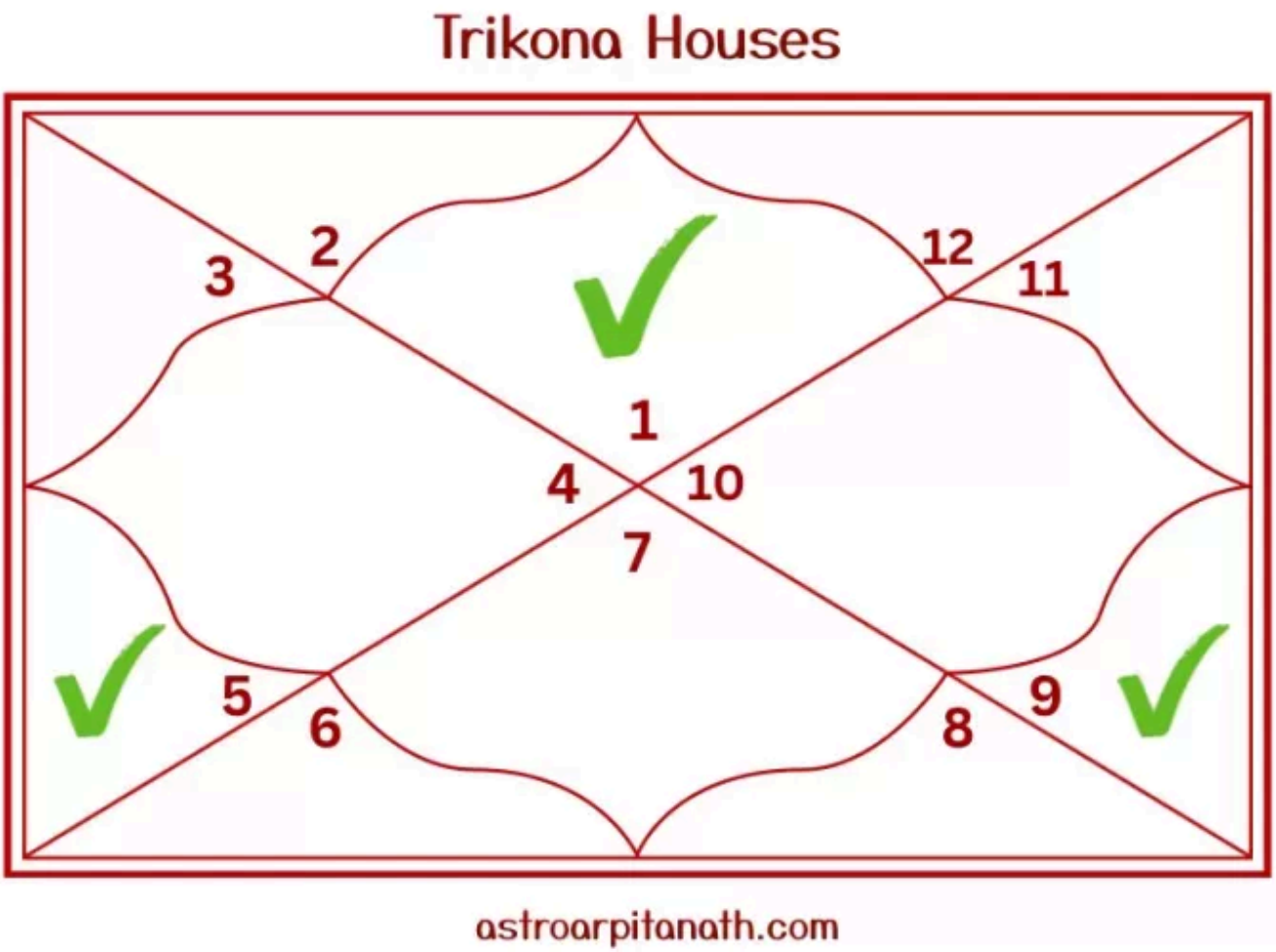

• **त्रिकोण (त्रिकोण भाव - 1, 5, 9):** कृपा, ज्ञान और भाग्य के शुभ भाव। यहाँ स्थित ग्रह आमतौर पर आशीर्वाद और सकारात्मक चरित्र प्रदान करते हैं।

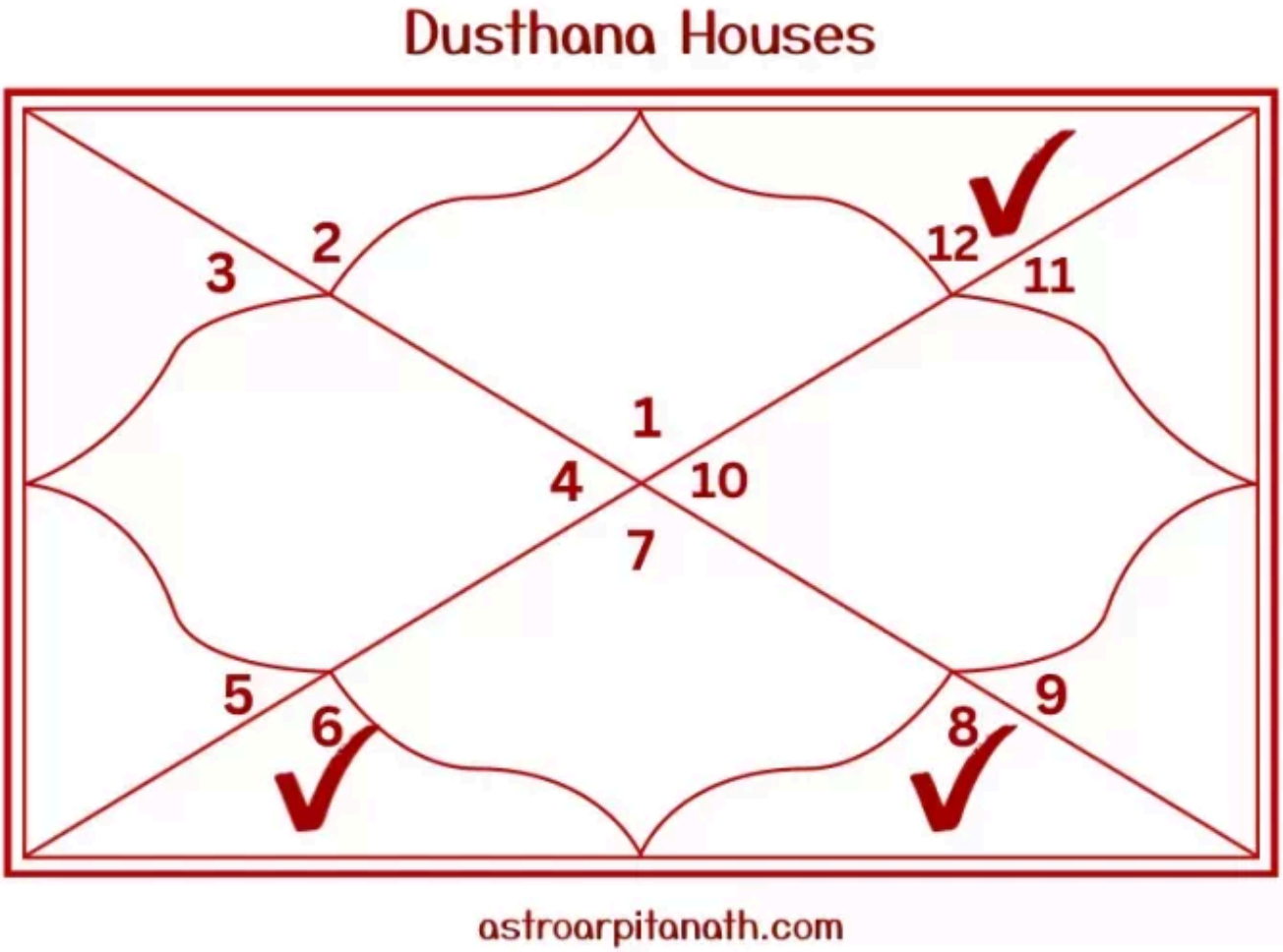

• **दुस्थान (कठिन भाव - 6, 8, 12):** जीवन की चुनौतियों, ऋणों, परिवर्तनों और अलगाव का प्रतिनिधित्व करने वाले भाव।

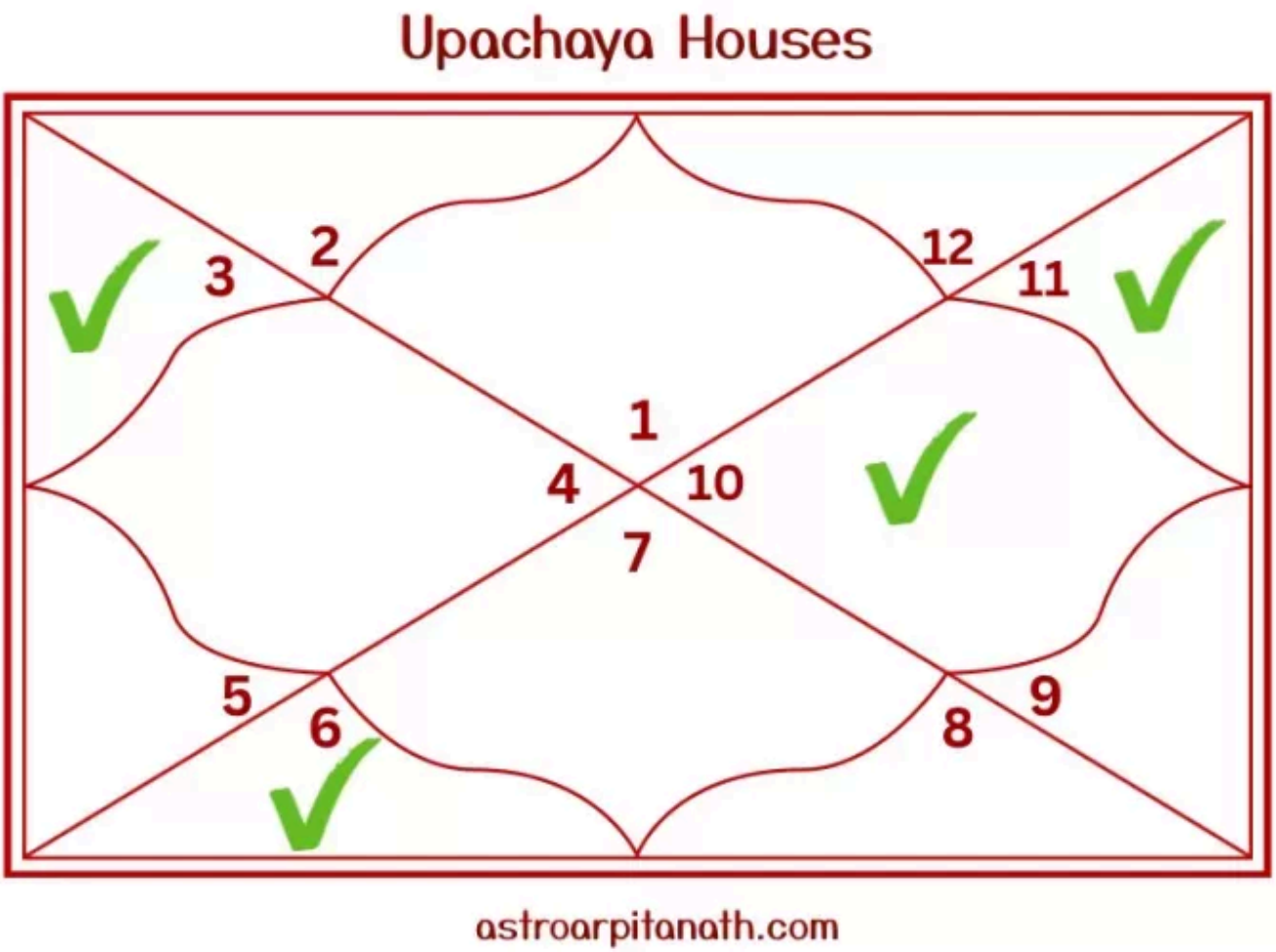

• **उपचय (वृद्धि के भाव - 3, 6, 10, 11):** वे भाव जो समय, अनुशासन और निरंतर प्रयास के साथ बेहतर होते हैं। नैसर्गिक पापी ग्रह यहाँ अच्छा परिणाम देते हैं।

चरण 5: भावों में ग्रहों (Grahas) की स्थिति को समझें

देखें कि नौ भौतिक और छाया ग्रह कहाँ स्थित हैं:

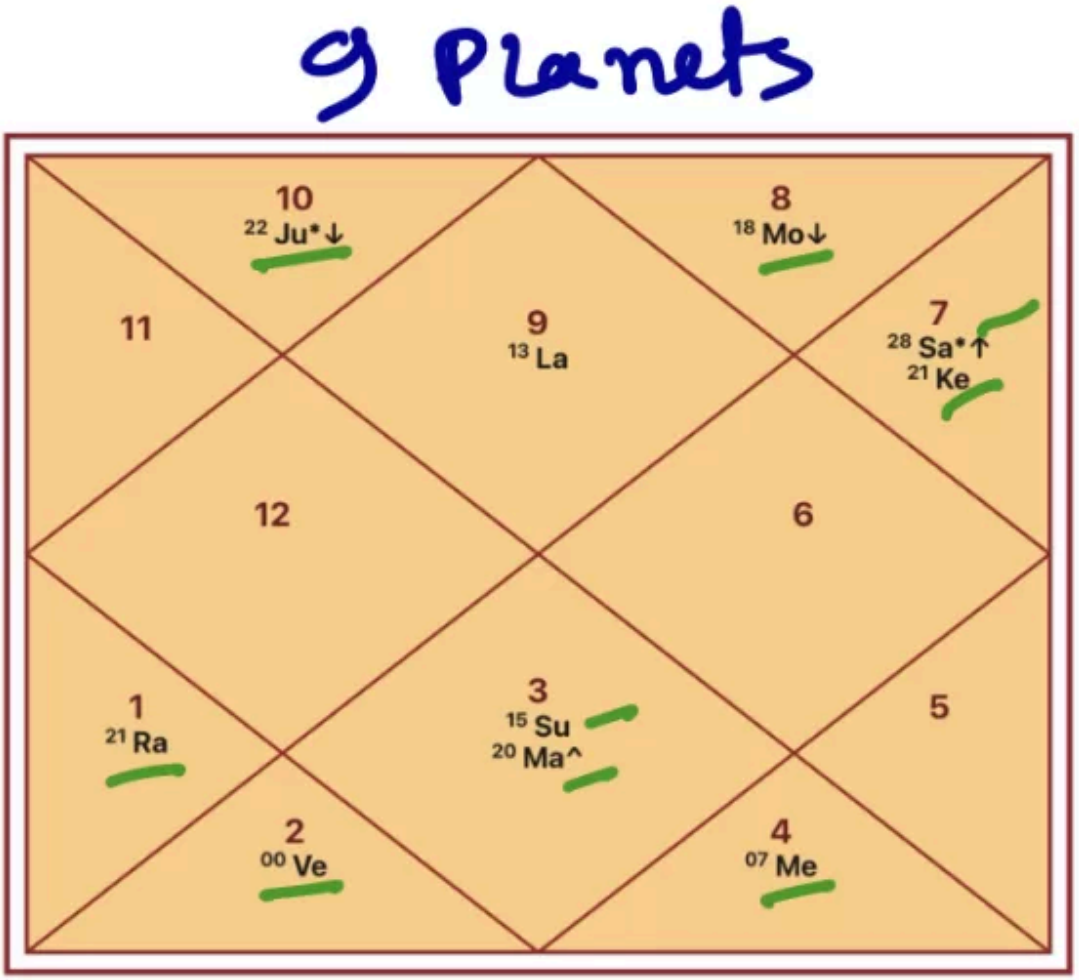

• **सूर्य (Surya):** आत्मा, पिता, अधिकार, सरकार, आत्मविश्वास और शारीरिक ऊर्जा।

• **चंद्रमा (Chandra):** मन, भावनाएं, मातृ संबंध, दृष्टिकोण और सामाजिक लोकप्रियता।

• **मंगल (Mangal):** प्रेरणा, ऊर्जा, साहस, भाई-बहन, अचल संपत्ति और तकनीकी कौशल।

• **बुध (Budha):** संवाद, व्यापार, विश्लेषणात्मक तर्क, विद्या और अनुकूलनशीलता।

• **गुरु (Guru):** दैवीय कृपा, नैतिकता, ज्ञान, धन, संतान और आध्यात्मिक गुरु।

• **शुक्र (Shukra):** प्रेम, विवाह, कला, कूटनीति, सुख-सुविधा, विलासिता और वाहन।

• **शनि (Shani):** अनुशासन, समय, धैर्य, सेवा, कर्तव्य, विलंब और दीर्घायु।

• **राहु (North Node):** भौतिक आकर्षण, लीक से हटकर रास्ते, नवाचार और विदेशी प्रभाव।

• **केतु (South Node):** वैराग्य, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, मोक्ष, अनुसंधान और अभौतिक दृष्टिकोण।

चरण 6: ग्रहों की स्थिति (Dignity) और बल की जाँच करें

किसी ग्रह की सकारात्मक परिणाम देने की क्षमता उस राशि में उसकी स्थिति (dignity) पर निर्भर करती है जिसमें वह स्थित है:

• **उच्च (Ucha):** ग्रह अपनी सर्वोच्च स्थिति में होता है और पूरी शक्ति व आत्मविश्वास के साथ कार्य करता है (जैसे, मेष राशि में सूर्य, कर्क राशि में गुरु)।

• **स्वराशि (Swarashi):** ग्रह अपने घर के क्षेत्र में सहज होकर बैठता है और अपने कार्यक्षेत्र के परिणाम आसानी से प्रदान करता है (जैसे, वृश्चिक राशि में मंगल, वृषभ राशि में शुक्र)।

• **नीच (Neecha):** ग्रह अपनी सबसे कमजोर राशि में होता है, जहाँ संतुलित परिणाम देने के लिए प्रयास, परिपक्वता या नीच भंग (Neecha Bhanga) की आवश्यकता होती है (जैसे, वृश्चिक राशि में चंद्रमा, मकर राशि में गुरु)।

• **वक्री (Vakri):** ग्रह पीछे की ओर चलता हुआ प्रतीत होता है, जिससे उसकी ऊर्जा आंतरिक हो जाती है और वह अपने कार्यक्षेत्र में गहरे पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रेरित करता है।

• **अस्त (Asta):** ग्रह सूर्य के अत्यधिक निकट स्थित होता है, जिसके कारण उसके स्वतंत्र कारकत्व सूर्य के तेज और अहंकार के प्रभाव से दब जाते हैं।

शुरुआती लोगों के लिए 4-चरणीय कुंडली पढ़ने की चेकलिस्ट

1. लग्न को पहचानें: पहले भाव को देखें। उदित हो रही राशि की संख्या पर ध्यान दें और कुंडली में उसके स्वामी (लग्नेश) की स्थिति देखें, जिससे यह पता चले कि आपके जीवन का मुख्य केंद्र कहाँ है।

2. चंद्र राशि (जन्म राशि) जानें: अपने भावनात्मक स्वभाव और मानसिक सोच के तरीके को समझने के लिए चंद्रमा की स्थिति देखें।

3. सूर्य राशि खोजें: अपनी पेशेवर महत्वाकांक्षाओं, जीवन के उद्देश्य और मूल इच्छाशक्ति को समझने के लिए सूर्य की स्थिति का पता लगाएं।

4. केंद्र और त्रिकोण भावों का अवलोकन करें: यह जानने के लिए कि आपके जीवन की मुख्य प्रेरक शक्तियां कौन सी हैं, देखें कि 1, 4, 5, 7, 9 और 10 भावों में कौन से ग्रह स्थित हैं।

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।